**सो ई संतु भग़तु, सो ई पंडतु ग्यानवानु,**
**मिरग् तिरिष्ना जे जल जां. ड़िठो जंहिं जग़तु,**
**मिटायाईं मन मों, सामी ममता मतु,**
**अनभइ आतम ततु, पाए परिचो पाण सां.**

***सामीजी संत, भक्त, पंडित और ज्ञानी पुरुष के लक्षण बताते हुए कहते हैं कि जिस व्यक्ति ने इस संसार को मृगतृष्णा के जल की भाँति असत्य समझा है, जिसने अपने मन से ममता, मोह आदि विकारों को निकाल लिया है, जिसने आंतरिक ज्ञान द्वारा परमात्मा को पहचाना/समझा है और मन में आत्म-तत्व (परमात्मा) के दर्शन का आनंद प्राप्त किया है, वही सच्चा संत, भक्त, पंडित अथवा ज्ञानी पुरुष है।***

इस भौतिक जगत में भिन्न-भिन्न स्वभाव और वृत्तियों वाले लोग दिखाई देते हैं। अपने आप को बड़ा, चतुर, धनवान, बलवान आदि मानने वालों की संख्या भी कम नहीं है। गुण न होते हुए भी स्वयं को संत, पंडित और भगवान मानने वालों की भी कमी नहीं है, जिसके पीछे मात्र ढोंग, पाखंड एवं स्वार्थ ही दिखाई पड़ता है। इसके पीछे है धन कमाना, भोग-विलास अथवा अपना प्रभुत्व कायम करने की कामना। अपनी देह और भौतिक जगत को महत्व देने वाले ऐसे पुरुष इस सत्य से अनभिज्ञ रहते हैं कि यह सब क्षणभंगुर है, एक दिन नष्ट हो जाने वाला है। यह जगत् मिथ्या है, मृगजल की भाँति आभास मात्र है, सत्य केवल परमात्मा है। अत: उसी की भक्ति करनी चाहिए। इसके लिए अपने मन को शुद्ध करने हेतु भीतर से मोह, ममत्व, लोभ, क्रोध आदि विकारों को निकालना अत्यंत आवश्यक है। मन शुद्ध और पवित्र हुए बिना हमें न अतंर्ज्ञान हो सकेगा और न ही परमेश्वर के दर्शन अथवा परमेश्वर की प्राप्ति हो सकेगी। भौतिक जगत् से विमुख होकर अंतर्मुख होना अनिवार्य है। यह तत्त्व और तथ्य जिसकी समझ में आया है और जो इसे आचरण में लाता है, उसी को सच्चा संत, सच्चा भक्त या पंडित, ज्ञानवान आदि कहना चाहिए। मात्र आडंबर, ढोंग, झूठा बड़प्पन आदि का कोई महत्व नहीं है। भक्ति में शुद्धता, आसक्तिहीनता एवं एकनिष्ठता होनी ही चाहिए। सामी साहब भी इसकी आंतरिक शुद्धि एवं पवित्रता का उल्लेख करते हैं।

**आशा तजि माया तजै, मोह तजै अरु मान।**
**हरष शोक निंदा तजै, कहै कबीर संत जान।।**

■